

सः । न तत्प्राप्ते ऽनुकुर्वति 1, 3325. अन्वकुर्वन्नुलूकानां सारसा विरूतं त-
था । अज्ञाः शिवानां विरूतमन्वकुर्वत 16, 39. M. 2, 199. गतिं स्वगत्यानुच-
कार् MBh. 2, 2536. R. 3, 19, 7. 44, 13. Mṛāṅh. 133, 7. Buṅ. P. 1, 9, 40. es Jmd
gleichthun, mit dem gen. MBh. 14, 2664. भीमस्यानुकरिष्यामि बाहुः श-
स्त्रं भविष्यति Mṛāṅh. 102, 6. Kumāras. 1, 45. ननु कलमेन यूथपतेरनुकृतम्
Mālav. 71, 16. — 3) es Jmd gleichthun d. i. es Jmd (acc.) vergelten: न
वयं प्रभवस्तां त्वामनुकर्तुं गृहेश्वरि । अप्यायुषा वा कात्स्न्येन Buṅ. P. 3,
14, 20. — 4) anpassen: बन्धं ततो ऽनुकुर्वति (im Verse) Suṇ. 2, 60, 10.
तद्भावभावानुकृताशयाकृतिः (Burnouf: reproduisant dans ses pensées et
dans ses actions l'idée qu'il se fait de celles de son Dieu) Buṅ. P. 7,
7, 36. — caus. Jmd (acc.) Etwas (acc.) nachmachen lassen: तदुत्तीरनुका-
र्यति Buṅ. P. 4, 29, 17. — Vgl. अनुकर, °करणा, °कर्तर, °कार, °कारि-
न्, °कार्य, °कृति, °कृत्य, °क्री, अनानुकृत्य.

— अय 1) fortschaffen, wegschaffen, fortschleppen AV. 3, 9, 1 (s. u. अ-
भि). मातरस्तु बलात्पुत्रमपाकर्षुः MBh. 3, 10492. यो ऽपचक्रे (wegen des
med. wird auf P. 3, 1, 33. Vop. 23, 25 verwiesen) वनात्सीताम् BHATT. 8,
20. — 2) ein Leid —, Schaden zufügen, Jmd zu nahe treten, beleidigen:
दुष्यति दुष्टाष्टाशकुर्वत MBh. 3, 1043. नगरे वा पुरि वापि यदि ना-
पक्रोम्यहम् R. 4, 16, 19. PAṆKAT. I, 148. IV, 17. न विव्रो ऽपकृतं (eine
Beleidigung) वयम् MBh. 3, 10332. PAṆKAT. I, 317. Mit dem gen. der Per-
son: तस्यापचक्रे MBh. 3, 10742. इयं हि कस्यापकरोति किञ्चित् R. 2, 38,
5. अयकुर्वन्कि रामस्य 5, 47, 25. तस्यापकर्तुम् PAṆKAT. 27, 2. किं च रातस-
राजस्य रामेणापकर्तं पुरा R. 5, 80, 13. 4, 32, 10. 38, 3. 6, 16, 64. MBh. 3,
10331. PAṆKAT. 162, 14. 168, 6. 208, 17. mit dem acc. der Person: अय वा
सैनिकाः केचिदप्युर्विधिष्ठिरम् MBh. 3, 14835. — caus. = simpl. 2: ना-
हं कदाचिदपि त्वामपकारिष्यामि PAṆKAT. 264, 10. — Vgl. अपकर्तर, अ-
पकर्तन्, अपकार, अपकारिन्, अपकृत, अपकृत्य, अपक्रिया, अपचकीया.

— अयि 1) thun in Beziehung auf, zu Gunsten eines Andern: गन्मिवे-
तत्तत्तमभिनुकृतिं गर्भं सत्तमभिकरोति ÇAT. Br. 2, 3, 1, 4. 7, 5, 1, 32. — 2)
verschaffen so v. a. zuwegebringen: यथाभिचक्र देवास्तथापि कृणुता पुनः
AV. 3, 9, 1. — 3) thun, machen: कुरुतेत्रे निवेशमभिचक्रतुः schlügen ihre
Wohnung auf SUND. 2, 26. — desid. Etwas machen wollen, streben nach:
भूयो रणं सो ऽभिचक्रिष्यमाणः MBh. 4, 1660. — Vgl. अभिकरण, अभिकलन्.

— आ 1) herbeibringen, herbeischaffen: दीर्घो न सिध्मा कृणोत्यद्यो
RV. 1, 173, 11. आ नः कृणुष्व सुचिताय रोदसी 2, 2, 6. 3, 27, 6. 8, 90, 1. 4, 23,
5. यज्ञेन्द्रमवसा चक्रे अर्वाक् 3, 32, 13. दाम्नुषे ऽर्वाक्षं रयिमा कृधि 8, 79, 4.
4, 33, 7. आ त्वामृजिष्ठां सृष्टाय चक्रे 5, 29, 11. — 2) hertreiben, zusam-
mentreiben: गोनीमाचक्राणस्त्रीणि शीर्षा परा वर्क RV. 10, 8, 9. यदा पुशं न
गोपाः करामहे 23, 6. 68, 5. 89, 7. 136, 2. प्रतीचः पुनरा कृधि treibe sie
wieder rückwärts AV. 5, 8, 7. 10, 1, 6. — caus. 1) von Jmd (acc.) Etwas
(acc.) fordern: (महाराजम्) पुनराकारयामास तमेव वरमङ्गना R. 2, 13, 2.
— 2) herbeirufen, zu sich rufen: आकारय मुनीन् शीघ्रं भोजनाय MBh. 3,
15346. fg. PAṆKAT. 24, 13. DAṢAK. 198, 9. — 3) hervorrufen, zur Erschei-
nung bringen (?) Vedāntas. in BENF. Chr. 213, 6. 217, 9. fg. — desid.
auszuführen gedenken: यावदरिः पारम्यमिकं विधिमाचिकीर्यति DAṢAK.
in BENF. Chr. 200, 24. — intens. wiederholt an sich ziehen: लोकाह्स्मृ-
भ्य मुहुरारचिर्कृत (partic.) AV. 11, 3, 6. — Vgl. अनाकृत, आकार, आ-
कारण, आकारणीय, आकृत, आकृति, आस्क.

II, Theil.

— अत्या 1) über Etwas herholen: तामुदीचीमत्याकुर्वति ÇAT. Br. 3, 2,
4, 22. — 2) med. schmähen: गार्गिकापात्याकुर्वते P. 5, 1, 134, Sch. Vgl.
अत्याकार.

— अया 1) wegschaffen, wegtreiben, fernhalten: अय द्वेषास्या कृधि RV.
3, 16, 5. 6, 39, 8. AV. 1, 2, 2. अरे हिंसनानामप दिव्युमा कृधि RV. 10, 142,
1. वत्सान् TS. 2, 3, 5, 5. 6, 4, 11, 4. ÇAT. Br. 1, 7, 1, 1. स (पुत्रः) कथं शक्यते
ऽस्माभिरपाकर्तुं बलादितः MBh. 1, 5680. ब्रह्मस्थानादपाकृतः (ब्राह्मणः)
17, 6584. नैषं तिमिरमपाकरोति चन्द्रः ÇAT. 137. RAGH. 6, 58. पापमपाक-
रोति (सत्संगतिः) BHART. 2, 20. Kumāras. 3, 14. KATHAS. 16, 49. weg-
nehmen: प्राग्भागमपाकृत्य KAUC. 21, 79. KĀTJ. ÇR. 19, 1, 22. 22, 3, 15.
मतम् eine Meinung zurückweisen DĀJ. 127, ult. — 2) von sich ab-
werfen, von sich stossen, von sich weisen, aufgeben, absteigen von: अ-
पाकृतकटीपटः RĪGĀ-TAB. 3, 419. ऋणम् sich einer Schuld entledigen M.
6, 35. R. 2, 106, 26. MBh. 1, 8342. हेतैरियामुभिरपाकृतमुन्मनस्वैः (दु-
र्दिनम्) Mṛāṅh. 76, 4. मैवं जीर्णमुपास्व तं सख्यं भवत्वपाकृधि MBh. 1, 5141
= 5200. शिवा भुजङ्गैर्यपाचकार RAGH. 7, 47. — Vgl. अयाकरण fgg. und
अपाकृति.

— अया an sich ziehen: यथादो ऽश्वाङ्गा वा पुनरयाकारं (absolut.)
तर्पयति AIT. Br. 3, 5.

— अया so v. a. अया 1: विश्वा द्वेषासि नृदि चाव चा कृधि VĀLAKH.
3, 4.

— उदा 1) hinaustreiben, herausholen; auswählen: ता (गाः) ह्येदाच-
कार ÇAT. Br. 14, 6, 1, 3. उडुस्त्रा अकः RV. 10, 67, 4. उदाकृत्या (°त्य)
सा वयं चरेत् TS. 7, 1, 5, 6. तामो विलिख्य भीमामुदाकृतं नारदः AV. 12,
4, 41. यामिदं राजा संग्रामं जिवेदाकुरुते ÇAT. Br. 3, 3, 1, 14. — 2) med.
überwältigen: श्येनो वर्तिकामुदाकुरुते (vgl. उप) P. 1, 3, 32, Sch.

— उपा 1) herbeiholen, herbeitreiben (bes. vom Vieh zum Opfer oder
in den Stall): उपं ते गा इवाकर्म् RV. 10, 127, 8. उपं ते स्तोमोन्वयुषा इ-
वाकर्म् 1, 114, 9. AV. 2, 34, 2. शिवाः स्तोरूपं नो गोष्ठमाकः RV. 10, 169,
4. TS. 7, 4, 10, 1. ÇAT. Br. 3, 7, 3, 3. 4, 2, 5, 11. अमुष्मै त्वा जुष्टमुपाकरोमि
ĀCv. GRM. 1, 11. तेभ्य इमं बलिमुपाकरोमि 2, 1. वन्याहारम् — उपाकृत्य
समाकृत्य MBh. 3, 3098. — 2) übergeben, überlassen, hingeben, verleihen:
गोसहस्रमुपाकुरु R. 2, 32, 20. (क्षयज्ञानम्) उपाकर्तुमिच्छामि N. 23,
13. प्राणान्प्रियस्य तनयस्य च । ब्राह्मणार्थमुपाकृत्य MBh. 13, 6248. उपा-
कुरुष्व (कामम्) gewähre (den Wunsch) 3, 15965. — 3) sich verschaffen,
erlangen: लोके यशः स्थातिमुपाकरोतु MBh. 3, 10278. — 4) auffordern,
einladen; einleiten, die Vorbereitungen zu einer heiligen Handlung tref-
fen; sich an Etwas machen, an Etwas gehen: यदा वा अघर्षुताकरोति
वाचैवोपाकरोति वाचा हेतान्वाह AIT. Br. 2, 15. TS. 3, 3, 1, 1. सायमाहु-
त्याश्चिनमुपाकरोति AIT. Br. 3, 28. उपाकृते प्रातरनुवाके 33. KĀND. UP.
4, 16, 2. स्तोत्रम् TS. 3, 1, 2, 4. LĀTJ. 3, 1. TS. 3, 4, 3, 4. 6, 4, 3, 2. व्रतानि
व्रतपतय उपाकरोम्यग्रे KAUC. 42, 141. समिद्धे ऽग्नावुपाकृत्याङ्गमङ्गं हो-
ष्यामि वा MBh. 3, 10719. आवण्यो प्रोष्ठपद्यो वाप्युपाकृत्य यथाविधि । यु-
क्तश्चन्द्रास्यधीयत मासान्विप्रो ऽर्धपञ्चमम् ॥ M. 4, 95. अनुपाकृतमांसानि
Fleisch, welches nicht durch besondere Sprüche eingesegnet worden ist,
5, 7. JĀG. 1, 171. अन्यद्वत्तमुपाकरिष्यन् (उपाकारिष्यमाणः) ÇAT. Br. 14, 7,
3, 1) im Begriff eine andere Lebensweise anzutreten BH. ĀR. UP. 4, 3, 1.
Buṅ. P. 3, 6, 35 (Burnouf: décrire). — Vgl. उपाकरण fgg.

